2 हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद

किसी एक भाषा को दूसरी भाषा में ज्यों-का-त्यों या आवश्यकतानुसार रूपान्तरित कर देना ही अनुवाद कहलाता है। इसी प्रकार अन्य भाषा के वाक्यों को संस्कृत भाषा में रूपान्तरित कर देना ही संस्कृत अनुवाद कहलायेगा। **जैसे–** मोहन पढ़ता है, यह हिन्दी वाक्य है; इसका संस्कृत अनुवाद होगा– ''मोहन: पठति।''

सभी भाषाओं में भाव प्रकाशन का माध्यम वाक्य ही होता है। कर्त्ता और क्रिया वाक्यरूपी भवन के दो दृढ़ स्तम्भ हैं, अत: कर्त्ता और क्रिया का सम्बन्ध सुदृढ़ होना चाहिए। संस्कृत में यद्यपि शब्दों के क्रम में उलटफेर करने से अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता, फिर भी अनुवाद की सरलता के लिए संस्कृत के वाक्यों का क्रम भी हिन्दी के समान ही है। पहले कर्त्ता फिर कर्म और अन्त में क्रिया।

संस्कृत में कोई भी शब्द विभक्ति-रहित नहीं प्रयुक्त होता। इसकी क्रियाओं में लिङ्ग-भेद नहीं होता है। तीनों लिङ्गों में क्रिया समान हो सकती है।

अनुवाद के कुछ आवश्यक अङ्ग निम्नलिखित हैं–

(क) वचन– संस्कृत में तीन वचन होते हैं–

(1) एकवचन (एक वस्तु के लिए)

(2) द्विवचन (दो वस्तु के लिए)

(3) बहुवचन (दो से अधिक वस्तु के लिए।)

(ख) पुरुष– संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं–

(1) प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष– जिसके विषय में बात कही जाय।

(2) मध्यम पुरुष–जिससे बात कही जाय।

(3) उत्तम पुरुष– जो बात को कहता है।

प्रत्येक पुरुष तीनों वचनों में होते हैं। क्रियाओं के रूप भी पुरुषों के आधार पर ही चलाये जाते हैं। इसलिए प्रत्येक क्रिया के नौ रूप उदाहरणार्थ इस प्रकार होते हैं–

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति	पठत:	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथ:	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव:	पठाम:

क्रियाओं के साथ प्रत्येक पुरुष के प्रत्येक वचन में जुड़ने वाले कर्त्ता भी नौ हैं–

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	स: (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं, हम)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

(ग) कर्त्ता– क्रिया के करने वाले को कर्त्ता कहते हैं। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। क्रिया के पहले 'कौन' लगाने से उत्तर में जो शब्द प्राप्त हो, वही कर्त्ता है।

(घ) क्रिया–जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाय, उसे क्रिया कहते हैं।

(ङ) काल– क्रिया के तीन प्रमुख काल होते हैं–

(1) वर्तमान काल– जिससे चालू समय का बोध हो, वह वर्तमान काल है। इसके लिए लट् लकार का प्रयोग होता है।

(2) भूतकाल– जिससे बीते समय का बोध होता है, वह भूतकाल है। इसमें लङ् लकार का प्रयोग होता है।
(3) भविष्यत् काल– जिससे आने वाले समय का बोध होता है, वह भविष्यत् काल है। इसमें लृट् लकार का प्रयोग होता है।
(च) लिङ्ग– लिङ्ग तीन प्रकार के होते हैं। संस्कृत में क्रिया के ऊपर लिङ्ग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(1) पुंलिङ्ग– जिससे पुरुष जाति का बोध होता है।
(2) स्त्रीलिङ्ग– जिससे स्त्री जाति का बोध होता है।
(3) नपुंसकलिङ्ग– जिससे न पुरुष जाति का बोध हो और न स्त्री जाति का।
(छ) कारक– कारक आठ होते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

विभक्ति	**कारक का नाम**	**चिह्न**
प्रथमा	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होने में)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा,रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पर, पे
सम्बोधन (प्रथमा)	सम्बोधन	हे, भो, अरे

लट् लकार (वर्तमान काल) प्रथम पुरुष

नियम 1– वर्तमान काल में लट् लकार का प्रयोग होता है। कर्तृवाच्य में कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है, अर्थात् प्रथमा विभक्ति का रूप लिखा जाता है और उसी कर्त्ता के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है।

यथा–

1. बालक: पठति – लड़का पढ़ता है।
2. बालिका पठति – लड़की पढ़ती है।
3. फलं पतति – फल गिरता है।
4. सा पठति – वह पढ़ती है।
5. भवान् गच्छति – आप जाते हैं।
6. भवती लिखति – आप लिखती हैं।
7. बालकौ गच्छत: – दो लड़के जाते हैं।
8. छात्रा: पठन्ति – छात्र पढ़ते हैं।

नियम 2– जब वाक्य में दो कर्त्ता होते हैं और 'च' (और) से जुड़े होते हैं, तब क्रिया द्विवचन होती है।
नियम 3– जब वाक्य में दो कर्त्ता 'वा' (अथवा) से जुड़े होते हैं, तब क्रिया द्विवचन की न होकर एकवचन की ही होती है।
नियम 4– जब वाक्य में दो से अधिक कर्त्ता 'च' से जुड़े होते हैं, तब क्रिया बहुवचन की होती है।
नियम 5– जब वाक्य में दो से अधिक कर्त्ता 'वा' से जुड़े होते हैं, तब क्रिया एकवचन की होती है।
नियम 6– 'च' 'वा' 'अथवा' आदि अव्यय हैं। हिन्दी में ये शब्द जिस शब्द के पहले आते हैं, संस्कृत में उसी शब्द के बाद प्रयुक्त होते हैं।

आदर्श वाक्य

1. राम: कृष्णश्च पठत: – राम और कृष्ण पढ़ते हैं।
2. राम: कृष्ण: वा गच्छति – राम या कृष्ण जाता है।
3. राम: कृष्ण: मोहनश्च लिखन्ति – राम, कृष्ण और मोहन लिखते हैं।
4. राम: कृष्ण: हरि: वा गच्छति – राम या कृष्ण या हरि जाता है।
5. छात्रौ पठत: – दो छात्र पढ़ते हैं।

6. बालिके हसत:	–	दो लड़कियाँ हँसती हैं।
7. भवन्त: वदन्ति	–	आप लोग बोलते हैं।
8. भवत्य: पश्यन्ति	–	आप लोग देखती हैं।

अभ्यास - 1

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. वे सब जा रहे हैं। 2. लड़के और लड़कियाँ लिखते हैं। 3. राम और श्याम दौड़ते हैं। 4. मोहन या सोहन खा रहा है। 5. हरि, मोहन और सुरेश हँसते हैं। 6. सीता, गीता या लता आती है। 7. वे देखते हैं। 8. दो लड़कियाँ खा रही हैं। 9. लड़कियाँ गा रही हैं। 10. हाथी जा रहे हैं।

सहायक शब्द– आती है = आगच्छति। देखते हैं = पश्यन्ति। गा रही हैं = गायन्ति।

लट् लकार (वर्तमान काल) मध्यम पुरुष

नियम 1– संस्कृत में तुम, तुम दोनों, तुम सब मध्यम पुरुष के लिये 'युष्मद्' शब्द का प्रयोग 'त्वम्, युवाम्, यूयम्' होता है।

नियम 2– यदि मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का कर्त्ता 'च' से जुड़ा हो तो क्रिया मध्यम पुरुष द्विवचनान्त होती है और यदि दो से अधिक कर्त्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष बहुवचनान्त होती है।

नियम 3– यदि कई कर्त्ता में 'वा' अथवा 'या' जुड़े होते हैं, तो क्रिया अपने सबसे निकट (पास) के कर्त्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार होती है।

आदर्श वाक्य

1. त्वं पठसि	–	तुम पढ़ते हो, पढ़ती हो।
2. युवां पठथ:	–	तुम दोनों पढ़ते हो, पढ़ती हो।
3. यूयं पठथ	–	तुम सब या तुम लोग पढ़ते हो, पढ़ती हो।
4. त्वं रामश्च गच्छथ:	–	तुम और राम जाते हो।
5. युवां राम: हरिश्च गच्छथ	–	तुम, राम और हरि जाते हो।
6. यूयं महेश: सुरेशश्च गच्छथ	–	तुम लोग, महेश और सुरेश जाते हो।
7. त्वं राम: हरि: वा गच्छति	–	तुम, राम या हरि जाते हो।
8. युवां राम: ते वा गच्छन्ति	–	तुम दोनों राम या वे जाते हैं।

अभ्यास - 2

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. हम या तुम पढ़ते हैं। 2. तुम लोग या वे देखते हैं। 3. तुम लोग या वह दौड़ता है। 4. वह और मैं लिखता हूँ। 5. हरि या राम खेल रहा है। 6. तुम, गंगा और गायत्री हँस रही हो। 7. तुम और गीता बोलते हो। 8. तुम दोनों खाते हो। 9. वे लोग और तुम पूछते हो। 10. तुम लोग या वे लोग आ रहे हैं।

सहायक शब्द– देखता हूँ = पश्यन्ति। दौड़ते हैं = धावन्ति। लिखता हूँ = लिखाव:। हँस रही हो = हसथ। पूछते हो = पृच्छथ। आ रहे हैं = आगच्छन्ति।

लट् लकार (वर्तमान काल) उत्तम पुरुष

नियम 1– संस्कृत में उत्तम पुरुष 'मैं, हम दोनों, हम सब या हम लोग' के लिए 'अस्मद्' शब्द का प्रयोग 'अहम्, आवाम्, वयम्' होता है।

नियम 2– यदि वाक्य में दो से अधिक कर्त्ता हों और वे 'च' से जुड़े हों तथा वे प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष के हों, तो क्रिया उत्तम पुरुष बहुवचन की होती है।

नियम 3– यदि वाक्य में 'च' अव्यय से जुड़े हुए उत्तम और मध्यम पुरुष के दो ही कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष द्विवचन की होगी।

आदर्श वाक्य

1. अहं पश्यामि	–	मैं देखता हूँ, देखती हूँ।
2. आवां पश्याव:	–	हम दोनों देखते हैं, देखती हैं।
3. वयं पश्याम:	–	हम लोग देखते हैं, देखती हैं।
4. त्वम् अहं रामश्च पठाम:	–	तुम, मैं और राम पढ़ते हैं।
5. त्वम् अहं च हसाव:	–	तुम और मैं हँसता हूँ।
6. स: वा त्वं वा अहं वा लिखामि	–	वह, तुम या मैं लिखता हूँ।

अभ्यास - 3

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. हम लोग खाते हैं। 2. मैं बोलता हूँ। 3. हम दोनों दौड़ते हैं। 4. हम, तुम और गोपाल पूछते हैं। 5. तुम और मैं देखता हूँ। 6. हरि या तुम आते हो। 7. तुम हरि और मैं रक्षा करता हूँ। 8. हम लोग या वे लोग सोते हैं। 9. वे दोनों और हम दोनों गिरते हैं। 10. तुम दोनों और हम लोग पाते हैं।

सहायक शब्द– पूछते हैं = पृच्छाम:। देखता हूँ = पश्याव:। आते हो = आगच्छसि। रक्षा करता हूँ = रक्षाम:। सोते हैं = शेरते। गिरते हैं = पताम:। पीते हैं = पिबाम:।

लङ् लकार (भूतकाल) सभी पुरुष

नियम 1– जो काम बीते हुए समय में हो चुका है, उस काल (समय) को भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के लिए संस्कृत में लङ्लकार का प्रयोग होता है।

नियम 2– कभी-कभी वर्तमान काल के प्रथम पुरुष की क्रिया में 'स्म' जोड़कर भूतकाल व्यक्त किया जाता है। यह प्राय: 'था' के लिए प्रयुक्त होता हैं। जैसे– पठति स्म = पढ़ रहा था, हसति स्म = हँसता था।

आदर्श वाक्य

1. छात्र: अगच्छत्	–	छात्र चला गया।
2. छात्रा अगच्छत्	–	छात्रा चली गयी।
3. फलम् अपतत्	–	फल गिरा।
4. स: अपश्यत्	–	उसने देखा।
5. यूयम् अपतत्	–	तुम लोग गिर गये।
6. आवाम् अकथयाव	–	हम दोनों ने कहा।
7. बालक: गच्छति स्म	–	लड़का जा रहा था।
8. बालिका लिखति स्म	–	लड़की लिख रही थी।

अभ्यास - 4

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. लड़कों ने खा लिया। 2. वे लोग चले गये। 3. हमने देखा। 4. लड़कियाँ रो रही थीं। 5. चोर भाग गये। 6. आप लोगों ने देखा। 7. श्याम ने लिखा। 8. वे दौड़ रहे थे। 9. हम लोगों ने सुना। 10. छात्रों ने याद किया।

सहायक शब्द– देखा = अपश्यन्। भाग गये = अपलायन्। दौड़ रहे थे = धावन्ति स्म। सुना = अशृणुम। याद किया = स्मरन्।

2. कोष्ठक में दी हुई क्रिया को लङ् लकार में बदलो–

(1) त्वं (लिखसि)। (2) तौ कुत्र (गच्छत:)। (3) बालकौ (स्मरत:)। (4) ते (हसन्ति)। 5. शिष्या: (नमन्ति)। 6. सा (गच्छति)। 7. युवां (पचथ:)। 8. मालाकार: (सिञ्चति)। 9. अहं (पृच्छामि)।

लृट् लकार (भविष्यत्काल) सभी पुरुष

नियम 1– जब कोई काम आगे आने वाले समय में होता है, तब वह भविष्य काल में होता है और भविष्यकाल में लृट्लकार का प्रयोग होता है। इसके रूप लट्लकार के समान होते हैं। केवल 'ति' 'त' आदि प्रत्ययों के पहले 'स्य' जुड़ जाता है। जैसे– पठति–पठिष्यति।

आदर्श वाक्य

1. सः पठिष्यति	–	वह पढ़ेगा।
2. सा पठिष्यति	–	वह पढ़ेगी।
3. फलं पतिष्यति	–	फल गिरेगा।
4. रामः श्यामश्च गमिष्यतः	–	राम और श्याम जायेंगे।
5. श्यामः हरिः वा भक्षयिष्यति	–	श्याम या हरि खायेगा।
6. भवन्तः द्रक्ष्यन्ति	–	आप लोग देखेंगे।
7. भवती गमिष्यति	–	आप जायेंगी।

अभ्यास - 5

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. लड़के जायेंगे। 2. आप लोग लिखेंगे। 3. गीता खायेगी। 4. हम दोनों ठहरेंगे। 5. सतीश या शेखर पूछेगा। 6. तुम दोनों दोगे। 7. गणेश हँसेगा। 8. वे लोग आवेंगे। 9. मोहन, सोहन और रमेश देखेंगे। 10 हम लोग याद करेंगे।

2. कोष्ठक में दी गयी हिन्दी क्रियाओं को संस्कृत में बदल कर लिखें–

(1) आवां (जायेंगे)। (2) भवन्तः (लिखेंगी)। (3) सीता (पढ़ेगी)। (4) गुरुः (उपदेश देंगे)। (5) कन्याः (पकायेंगी)। (6) अहं (बैठूँगा)। (7) लता (गायेगी)। (8) पुत्रः (होगा) (9) बालिका (नाचेगी)। (10) शुकौ (बोलेंगे)।

लोट् लकार, सभी पुरुष

नियम 1– लोट् लकार का प्रयोग आज्ञा, इच्छा, प्रार्थना, अनुमति, आशीर्वाद आदि अर्थों में होता है।

नियम 2– प्रथम पुरुष में इस लकार का प्रयोग प्रायः इच्छा प्रार्थना अर्थ में होता है।

नियम 3– मध्यम पुरुष में इसका प्रयोग आज्ञा, आशीर्वाद अर्थ में होता है। कभी-कभी आज्ञा में 'तुम' कर्त्ता छिपा रहता है। ऐसी दशा में क्रिया छिपे हुए कर्त्ता के अनुसार मध्यम पुरुष की होती है।

नियम 4– उत्तम पुरुष में इसका प्रयोग इच्छा और प्रश्न अर्थ में होता हैं।

आदर्श वाक्य

1. सः लिखतु	–	वह लिखे
2. सा पठतु	–	वह पढ़े
3. भवान् आगच्छत्	–	आप आयें
4. त्वं पठ	–	तुम पढ़ो
5. चिरंजीवी भव	–	दीर्घायु हो
6. अहं गच्छानि	–	मैं जाऊँ
7. किम् अहं लिखानि	–	क्या मैं लिखूँ?

अभ्यास - 6

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. तुम लोग जाओ। 2. क्या मैं पढ़ूँ। 3. आप लोग कहें। 4. लड़के जायें। 5. आप प्रसन्न हों। 6. तुम दोनों ठहरो। 7. हाथी जाय। 8. वे लोग आवें। 9. पानी बरसे। 10. सेवक देखें।

सहायक शब्द– कहें = कथयन्तु। **बैठो** = तिष्ठतम् । **बरसे** = वर्षसु।

2. कोष्ठांकित धातु का रिक्त स्थान में लोट् लकार रूप लिखें–

(1) राम .... (पठ्)। (2) जना: .... (गम्)। (3) शिष्यौ .... (नम्)। (4) पुत्रा: .... (नम्)। (5) अहं .... (लिख्)। (6) अत्र .... (उप + विश्)। (7) त्वं बहि: मा .... (गम्)।

विधिलिङ् लकार (चाहिए) सभी पुरुष

नियम 1– विधिवाक्य (जिसमें 'चाहिए' शब्द का प्रयोग होता है)। इच्छा प्रकट करना, अनुमति, प्रार्थना, सम्भावना, सामर्थ्य प्रकट करना इत्यादि अर्थों में तथा यदि के साथ विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

विशेष– इन अर्थों में कहीं-कहीं लोट् लकार का भी प्रयोग किया जाता है। 'चाहिए' से युक्त वाक्यों में कर्त्ता में 'को' का चिह्न लगा रहता है, उसे कर्म का चिह्न नहीं समझना चाहिए।

आदर्श वाक्य

1. बालक: पठेत्	–	लड़के को पढ़ना चाहिए या लड़का पढ़े।
2. बालिका पठेत्	–	लड़की को पढ़ना चाहिए या लड़की पढ़े।
3. बालका: पठेयु:	–	लड़कों को पढ़ना चाहिए या लड़के पढ़ें।
4. छात्र: तत्र पठेत्	–	छात्र को वहाँ पढ़ना चाहिए या छात्र वहाँ पढ़ें।
5. बालक: किं कुर्यात्	–	लड़का क्या करे?
6. किम् अहं पठानि	–	क्या मैं पढ़ूँ।

अभ्यास - 7

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. उसे जाना चाहिए। 2. तुम लोगों को पढ़ना चाहिए। 3. यदि लड़के वहाँ आयें। 4. क्या वे जायँ। 5. उन लोगों को पीना चाहिए। 6. हम लोगों को दौड़ना चाहिए। 7. तुम्हें हँसना चाहिए। 8. लड़कियों को नाचना चाहिए। 9. हम दोनों को सोना चाहिए। 10. आप को सुनना चाहिए।

सहायक शब्द– पठेत् = पढ़ना चाहिए। धावेम् = दौड़ना चाहिए।

2. रिक्त स्थानों में कोष्ठांकित धातु का विधिलिङ् लकार में उचित रूप लिखें–

(1) भवन्त: .... (पठ्)। (2) भवन्त: .... (गम्)। (3) त्वम् .... (नम्)। (4) सेवकौ .... (नी)। (5) अहं .... (दृश)। (6) ऋषि .... (तप्)।

अव्यय का प्रयोग

नियम– अव्यय शब्दों का रूप नहीं बदलता। इसलिए वे वाक्य में ज्यों का त्यों लिखे जाते हैं। 'च' 'वा' कुत्र, यत्र, तत्र, सर्वत्र, यदा, तदा, कदा, तर्हि आदि अनेक अव्यय शब्द हैं।

आदर्श वाक्य

1. इदानीं त्वं कुत्र गच्छसि	–	इस समय तुम कहाँ जा रहे हो?
2. वयम् अद्य न पठिष्याम:	–	हम लोग आज नहीं पढ़ते?
3. ते अत्र कदा आगच्छन्ति	–	वे यहाँ कब आते हैं?
4. यत्र त्वम् इच्छसि तत्र गच्छ	–	जहाँ तुम चाहते हो, वहाँ जाओ।

अभ्यास - 8

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. लड़के वहाँ नहीं जायेंगे। 2. ईश्वर सब जगह हैं। 3. वे यहाँ कब आयेंगे। 4. जैसा चाहते हो, वैसा होगा।

5. आप लोग जहाँ चाहें वहाँ ठहरें। 6. तुम लोग यहाँ मत आना। 7. तुम लोगों ने वहाँ क्या देखा। 8. वह नित्य सबेरे पढ़ता है। 9. जब वह गया, तब फिर नहीं आया। 10. उसे कल जाना चाहिए।

सहायक शब्द– जैसा = यथा। वैसा = तथा। चाहें = इच्छासु। क्या = किम्। सबेरे = प्रातः। फिर = पुनः। कल = श्व।

सर्वनाम का प्रयोग

नियम– 1– तद् (वह), यद् (जो), इदम् (यह), एतत् (यह), किम् (कौन, क्या), सर्व (सब), युष्मद् (तुम), अस्मद् (मैं, हम), अदस् (वह) आदि शब्द सर्वनाम हैं। इसमें युष्मद् और अस्मद् क्रमशः मध्यम तथा उत्तम पुरुष के हैं। शेष सभी प्रथम पुरुष के हैं।

नियम 2– सर्वनामों का प्रयोग विशेषणों की तरह होता है। जहाँ ये विशेषणों की तरह काम में आते हैं वहाँ उनके लिङ्ग, वचन और विभक्ति अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

नियम 3– सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संज्ञाओं के स्थान पर होता है, अतः इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

आदर्श वाक्य

1. का लिखति	–	कौन लिखती है?
2. का गच्छति	–	कौन जा रही है?
3. अयं हसति	–	यह हँसती है।
4. के गच्छन्ति	–	कौन जा रहे हैं?
5. सर्वे पश्यन्ति	–	सब देख रहे हैं।
6. अयं कः अस्ति	–	यह कौन है?

अभ्यास - 9

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. जो चलता है, वह गिरता है। 2. ये लोग कहाँ जा रहे हैं? 3. वहाँ कौन जायेगा? 4. वह कौन लिख रही है? 5. यहाँ कौन आया था? 6. सब लोग वहाँ बैठे हैं। 7. कौन रो रही हैं? 8. जो लिखेगा वह पढ़ेगा। 9. वह कौन देख रही है? 10. वह यहाँ नहीं आया।

सहायक शब्द– ये लोग = इमे। कौन = का (स्त्रीलिङ्ग)। जो = यः (पुंलिङ्ग)

विशेषण का प्रयोग

नियम 1– जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जिसकी विशेषता प्रकट की जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं। **जैसे–** सुन्दरः बालकः– सुन्दर लड़का, इसमें लड़का विशेष्य और सुन्दर विशेषण हुआ।

नियम 2– जो लिङ्ग, वचन और कारक विशेष्य में होता है, वही लिङ्ग, वचन और कारक (विभक्ति) उसके विशेषण में भी होता है **जैसे–** सुन्दरः पुरुषः – सुन्दर पुरुष (पुंलिङ्ग)। सुन्दरी नारी - सुन्दर स्त्री (स्त्रीलिङ्ग)। सुन्दरम् गृहम् (नपुंसकलिङ्ग)।

नियम 3– तद्, यद्, इदम्, अदस् , किम्, युष्मद्, अस्मद्, सर्व आदि सर्वनाम शब्दों का प्रयोग भी विशेषण की तरह होता है। जहाँ ये विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं वहाँ इनके लिङ्ग, वचन तथा कारक (विभक्ति) अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। **जैसे–** अयं बालकः – यह लड़का (पुंलिङ्ग), इयं बालिका– यह लड़की (स्त्रीलिङ्ग), इदम् फलम्– यह फल (नपुंसकलिङ्ग)।

नियम 4– संस्कृत में किम् (क्या) शब्द के आगे 'चित्' जोड़ देने से उसका अर्थ 'किसी' हो जाता है। ऐसे स्थान पर किम् शब्द का रूप उसके विशेष्य के अनुसार बनाकर' 'चित्' जोड़ा जाता है तथा आवश्यकतानुसार संधि भी करनी पड़ती है। **जैसे–** कस्मिश्चिद् वने–किसी वन में, आदि।

आदर्श वाक्य

1. श्यामः बुद्धिमान् बालकः अस्ति	–	श्याम बुद्धिमान लड़का है।
2. श्यामा बुद्धिमती बालिका अस्ति	–	श्यामा चतुर लड़की है।

3. इदं गृहं सुन्दरं वर्तते	–	यह घर सुन्दर है।
4. काशी विशाला नगरी अस्ति	–	काशी बड़ी नगरी है।

अभ्यास - 10

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत अनुवाद कीजिए–

1. यह उत्तम छात्र है। 2. जो लड़का जा रहा है वह मोटा है। 3. रावण बड़ा दुष्ट था। 4. वह लड़की चली गई। 5. यह मनोहर फूल है। 6. राधा सुन्दर नारी थी। 7. रमेश बुद्धिमान छात्र है। 8. भगवद्गीता उत्तम पुस्तक है। 9. यह वस्त्र पीला है। 10. यह चन्द्रमा है।

सहायक शब्द– मोटा = स्थूल:। पीला = पीतम्। बड़ा = अति।

संख्यावाचक विशेषण

नियम 1– संख्यावाचक (एक, द्वि, त्रि, चतुर, पंचन्) आदि शब्द विशेषण होते हैं। अत: इनके रूप अपने विशेष्य के अनुसार तीनों लिङ्गों में होते हैं। **जैसे–**एक: बालक: (एक लड़का), एका बालिका (एक लड़की)। एकम् नगरम्– (एक नगर) आदि।

नियम 2– प्रथम: (पहला), द्वितीय: (दूसरा), तृतीय: (तीसरा), चतुर्थ: (चौथा), पंचम: (पाँचवाँ), षष्ठ: (छठवाँ) आदि क्रमबोधक संख्यावाचक विशेषण सभी लिङ्गों और वचनों में अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। **जैसे–**प्रथम: बालक: (पहला लड़का), द्वितीय: पुरुष (दूसरा आदमी), तृतीय: पुष्पम् (तीसरा फूल) आदि।

आदर्श वाक्य

1. अयम् एक: गज: अस्ति	–	यह एक हाथी है।
2. द्वितीय: क: पुरुष: अस्ति	–	दूसरा कौन आदमी है।
3. इयम् एका बालिका आगच्छति	–	यह एक लड़की आ रही है।
4. इदम् एकं पुष्पम् अस्ति	–	यह एक फूल है।
5. तृतीया बालिका किं करोति	–	तीसरी लड़की क्या कर रही है?

अभ्यास - 11

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. एक लड़का है। 2. पहला घोड़ा दौड़ रहा है। 3. दूसरी स्त्री कहाँ जायेगी। 4. एक घर गिर गया। 5. यह एक मनोहर फूल है। 6. ये तीन फल हैं। 7. महेश एक अच्छा लड़का है। 8. तीसरी लड़की यहाँ आयेगी। 9. यह नवीं कक्षा है। 10. पहला आदमी मोटा है।

सहायक शब्द– घोड़ा = अश्व:। घर = गृहम्। अच्छा = उत्तम। यह = इदम्।

कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

नियम 1– क्रिया करने वाले को कर्त्ता कहते हैं और कर्त्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) 'ने' है। यह कहीं-कहीं छिपा रहता है। **जैसे–** राम लिखता है–राम: लिखति (कर्त्तृवाच्य) में 'ने' छिपा है और राम: प्रथमा विभक्ति का शब्द है।

नियम 2– संस्कृत में बिना विभक्ति लगाये शब्द निरर्थक होते हैं, अत: अर्थ बताने के लिए संज्ञा शब्दों में प्रथमा विभक्ति आती है। **जैसे–**राम: = राम। गज: = हाथी, शुक: = तोता, आदि।

नियम 3– पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग बनाने के लिए भी प्रथमा विभक्ति आती है। **जैसे–** तट: (पुंलिङ्ग), तटी (स्त्रीलिङ्ग), तटम् (नपुंसकलिङ्ग)– किनारा आदि।

नियम 4– अव्ययों के साथ तथा केवल नाम के कथन में प्रथमा विभक्ति होती है। **जैसे–** गाँधी 'बापू' इति प्रसिद्ध: अस्ति–गाँधी बापू इस (नाम से) प्रसिद्ध हैं।

आदर्श वाक्य

1. बालक: बालिका च पठत:	–	लड़का और लड़की पढ़ रहे हैं।
2. भानु: शशि: वा गच्छति	–	भानु या शशि जाता है।
3. शक: एक: पक्षी अस्ति	–	तोता एक चिड़िया है।
4. इदम् एकं नगरम् अस्ति	–	यह एक नगर है।
5. इयम् एका नगरी अस्ति	–	यह एक नगरी है।
6. संस्कृत देवभाषा इति प्रसिद्धा अस्ति	–	संस्कृत देवभाषा के नाम से प्रसिद्ध है।

अभ्यास - 12

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

1. अशोक 'प्रियदर्शी' इस नाम से प्रसिद्ध था। 2. राम और लक्ष्मण भाई थे। 3. गीता और रेखा चली गयीं। 4. सीता या रीता नहीं आयेंगी। 5. यह एक सुन्दर उपवन है। 6. हम और तुम वहाँ कब चलेंगे। 7. सीता सती नारी थी। 8. वे लोग वहाँ जायें।

सहायक शब्द– इस नाम से = इति। भाई = भ्रातरौ।

कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

नियम 1– किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से कर्त्ता जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं, अर्थात् जिस पर क्रिया का फल समाप्त होता है (पड़ता) है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। **जैसे–** बालक: वानरं ताडयति–लड़का बन्दर को मारता है। यहाँ 'ताडयति' क्रिया का फल वानर पर पड़ता है, अत: उसमें द्वितीया विभक्ति हुई है।

विशेष– क्रिया के पहले 'किसको' अथवा 'क्या' लगाने से जो उत्तर में आता है, वह कर्म होता है। हिन्दी में 'कर्म' का चिह्न 'को' है। यह कहीं-कहीं छिपा भी रहता है। जैसे–राम: पुस्तकं पठति– राम पुस्तक पढ़ता है। यहाँ कर्म का चिह्न 'को' छिपा है। यहाँ वाक्य में 'क्या' लगाने से 'क्या पढ़ता है, उत्तर में 'पुस्तक' आती है, अत: इसमें द्वितीया विभक्ति होगी।

वाक्य में यदि कर्म एक होता है तो उसमें एकवचन, दो हों तो द्विवचन और दो से अधिक हों तो बहुवचन होता है। **जैसे–** अहं गणेशं नमामि–मैं गणेश को प्रणाम करता हूँ। बालका: फलानि खादन्ति—लड़के फल खाते हैं, आदि। **यथा–**

1. बालक: नाटकम् अपश्यत्	–	लड़के ने नाटक देखा।
2. बालिका: गीतं गायन्ति	–	लड़कियाँ गीत गाती हैं।
3. अहं सूर्यं पश्यामि	–	मैं सूर्य को देखता हूँ।
4. शिक्षक: छात्रान् ताडयति	–	अध्यापक छात्रों को पीटता है।

नियम 2–याच् (माँगना), पच् (पकाना), पृच्छ (पूछना), ब्रू (बोलना), नी (ले जाना), हृ (चुराना) आदि और इनके अर्थ वाली अन्य धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे–गुरुः छात्रं प्रश्नं पृच्छति–गुरुजी छात्र से प्रश्न पूछते हैं। यहाँ 'छात्र से' कर्म कारक नहीं है, किन्तु इस विशेष नियम से 'छात्र' में द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

अन्य उदाहरण–

1. शिशु: मातरं मोदकं याचते	–	बच्चा माँ से लड्डू माँगता है।
2. स: तण्डुलान् ओदनं पचति	–	वह चावलों से भात पकाता है।
3. अध्यापक: छात्रं प्रश्नं पृच्छति	–	अध्यापक छात्र से प्रश्न पूछता है।
4. गोपाल: पुस्तकं गृहं नयति	–	गोपाल पुस्तक घर ले जाता है।

नियम 3–गमनार्थक धातु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। **जैसे–**बालक: गृहं गच्छति–लड़का घर में जाता है।

नियम 4–शी (सोना), स्था (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातु से पहले यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो इनके आधार में

द्वितीया विभक्ति हो जाती है। **जैसे–**राम: शिलाम् अधि- शेते–राम शिला पर सोता है।

नियम 5–अभित: (सब तरफ), परित: (चारो तरफ), सर्वत: (सब तरफ), उभयत: (दोनों ओर), हा, धिक, प्रति, बिना आदि के योग में (इन शब्दों की जिससे निकटता प्रतीत होती है, उनमें) द्वितीया विभक्ति होती है।

आदर्श वाक्य

1. कपि: वृक्षम् आरोहति	–	बन्दर पेड़ पर चढ़ता है।
2. सिंह: वनम् अटति	–	सिंह वन में घूमता है।
3. राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति	–	राजा सिंहासन पर स्थित है।
4. विद्यालयम् उभयत: एका नदी बहति	–	विद्यालय के दोनों ओर एक नदी बहती है।
5. व्याध: मृगं प्रति अपश्यत्	–	बहेलिये ने हिरन की ओर देखा।
6. मम् ग्रामं परित: वृक्षा: सन्ति	–	मेरे गाँव के चारों ओर पेड़ हैं।

अभ्यास - 13

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं। 2. विद्यार्थी गुरु के चारों ओर बैठे हैं। 3. तुम्हारे प्रति कोई ध्यान करेगा। 4. लंका के चारों ओर समुद्र है। 5. राम ने रावण को मारा। 6. रमेश पुस्तक लाता है। 7. सुरेश शिक्षक को प्रणाम करता है। 8. छात्र अध्यापक से पुस्तक माँगते हैं। 9. नौकर गाँव से बकरी चुराता है। 10. वे लोग फल खाएँगे।

2. कोष्ठांकित शब्दों में उचित विभक्ति लगाओ–

(1) (नगर) परित: जलं अस्ति।

(2) मुनि: (कुशासन) अधितिष्ठति।

(3) हरि: (वैकुण्ठ) अधितिष्ठति।

(4) मम विद्यालय: (गृह) निकषा अस्ति।

(5) (लवण) बिना भोजन स्वादु न भवति।

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

नियम 1–जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है, उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। उसकी पहचान 'से' या 'द्वारा' है। **जैसे–**छात्र: मुखेन खादति–छात्र मुख से खाता है। यहाँ कर्त्ता छात्र मुख से अपना काम पूरा कर रहा है, अत: वह करण कारक है और उसमें तृतीया विभक्ति 'मुखेन' हुई।

विशेष– आँख, कान, हाथ, पैर प्रत्येक आदमी के दो होते हैं। अत: जब एक के लिए इसका प्रयोग होता है, तब ये सदा द्विवचन में ही आते हैं। **जैसे–**अहं नेत्राभ्यां पश्यामि–मैं आँख से देखता हूँ।

जहाँ इनका प्रयोग एक से अधिक के लिए होता है, वहाँ इसमें द्विवचन और बहुवचन दोनों ही हो सकते हैं। जैसे– **वयं कर्णाभ्याम्** (द्विवचन) अथवा **कर्णै:** (बहुवचन) **शृणुम:–** हम लोग कान से सुनते हैं। यहाँ द्विवचन या बहुवचन दोनों हो सकता है।

यथा–

(1) सीता नाक से फूल सूँघती है।	सीता नासिकया पुष्पं जिघ्रति।
(2) मैं गेंद से खेलता हूँ।	अहं कन्दुकेन क्रीडामि।
(3) मैं मुँह से बोलता हूँ।	अहं मुखेन वदामि।
(4) हम सब आँखों से देखते हैं।	वयं नेत्राभ्यां पश्याम:।
(5) किसान हल से खेत जोतता है।	कृषक: हलेन क्षेत्रं कर्षति।

नियम 2– 'साथ' का अर्थ रखने वाले सह, साकम्, सार्द्धम्, समम् शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

नियम 3– जिस शब्द से शरीर के किसी अंग का विकार सूचित होता है, उस अंगवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है।

नियम 4— समानार्थक तुल्य:, सम:, समान: शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।
नियम 5— किसी वस्तु के मूल्य में तृतीया विभक्ति होती है।
नियम 6—निषेधार्थक 'आलम्' के योग में तृतीया विभक्ति होती है।
नियम 7—किम्, कार्यम्, कोऽर्थ:, प्रयोजनम् के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

आदर्श वाक्य

1. सीता राम के साथ वन गयी।	–	सीता रामेण सह वनम् अगच्छत्।
2. मैं पिताजी के साथ बाजार जाता हूँ।	–	अहं जनकेन साकं/समं आपणं गच्छामि।
3. राम नेत्र से काणा है।	–	राम: नेत्रेण काण: अस्ति।
4. पैर से लँगड़ा वह पुरुष चल नहीं सकता।	–	पादेन खञ्ज: स: जन: चलितुं न शक्नोति।
5. अर्जुन के समान धनुर्धारी नहीं था।	–	अर्जुनेन सम: धनुर्धारी न आसीत्।
6. सीता का मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।	–	सीताया: मुखं चन्द्रेण तुल्यम् अस्ति।
7. विवाद मत करो।	–	विवादेन अलम्।
8. मूर्खों को पुस्तकों से क्या प्रयोजन?	–	मूर्खाणां पुस्तकै: किं प्रयोजनम्?

अभ्यास - 14

(1) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(1) ग्वाले कृष्ण के साथ खेलते हैं। (2) मैं गेंद से खेलता हूँ। (3) तुम कलम से लिखते हो। (4) पुत्र पिता को मस्तक से नमस्कार करता है। (5) राम पैर से लँगड़ा है। (6) कानों से बहरा संगीत की ध्वनि नहीं सुनता है। (7) वे डण्डे से मारते हैं। (8) भीम गदा से प्रहार करता है। (9) कर्ण के समान दानी नहीं था (10) रोओ मत।

(2) नीचे दिये गये शब्दों में से चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

नेत्राभ्याम्, कर्णाभ्याम्, हस्तेन, कन्दुकेन, वाणेन, हलेन, विद्या, विनयेन, ज्ञानेन।

(1) अहं .... क्रीडामि। (2) वृषभौ .... भूमिं कर्षत:। (3) नर: .... प्रतिष्ठां प्राप्नोति। (4) बालक: .... पश्यति। (5) राम: .... हन्ति। (6) कृषक: .... ताडयति। (7) राम: .... शृणोति। (8) अहं .... लिखामि। (9) मनुष्यस्य शोभा .... अस्ति।

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

नियम 1—जिसको कोई वस्तु दी जाती है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। सम्प्रदान का चिह्न 'को' या 'के लिए' है।

यथा–

(1) मैं तेरे लिए पुस्तक लाऊँगा।	अहं तुभ्यं पुस्तकम् आनेष्यामि।
(2) वह दरिद्रों को धन देता है।	स: दरिद्रेभ्य: धनं यच्छति।
(3) राजा भिक्षुओं को भोजन देता है।	नृप: भिक्षुकेभ्य: भोजनं ददाति।
(4) वे हमें फल देते हैं।	ते अस्मभ्यं फलानि यच्छन्ति।
(5) वे दोनों राम के लिए जल लाते हैं।	तौ रामाय जलम् आनयत:।

नियम 2—'रुच्' धातु या उसके समान अर्थ वाली धातु के योग में, प्रसन्न होने में चतुर्थी विभक्ति होती है।
नियम 3—स्पृह् धातु के योग में ईप्सित पदार्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है।
नियम 4—क्रुध्, दुह्, ईर्ष्य्, असूय् धातुओं के योग में, जिसके प्रति क्रोध आदि किया जाता है, चतुर्थी विभक्ति होती है।
नियम 5—नम:, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा तथा अलम् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

आदर्श वाक्य

1. मुझे लड्डू अच्छे लगते हैं।	–	मह्यं मोदका: रोचन्ते।
2. उसे पूआ अच्छा लगता है।	–	तस्मै अपूप: स्वदते।
3. पिता पुत्र पर गुस्सा होता है।	–	जनक: पुत्राय क्रुध्यति।
4. रावण राम से द्रोह करता है।	–	रावण: रामाय द्रुह्यति।
5. दुर्जन सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं।	–	दुर्जना: सज्जनेभ्य: ईर्ष्यन्ति।
6. गुरु को नमस्कार।	–	गुरुवे नम:।
7. पुत्र का कल्याण।	–	पुत्राय स्वस्ति।
8. भूतों के लिए बलि।	–	भूतेभ्य: बलि:।
9. अग्नि के लिए स्वाहा।	–	अग्नये स्वाहा।

अभ्यास - 15

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. दुष्ट सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं। 2. तुम लड़कों से द्रोह करते हो। 3. कौरव पाण्डवों पर क्रोध करते थे। 4. इस समय छात्रों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता। 5. सज्जनों को विवाद अच्छा नहीं लगता। 6. भगवान शिव को नमस्कार है। 7. शाम को टहलना सबको अच्छा लगता है। 8. राम ने कृष्ण को गेंद दी। 9. नौकर स्वामी के लिए फल लाया।

सहायक शब्द–सज्जनों से = सज्जनेभ्य:। द्रोह करते हो = द्रुह्यसि। पढ़ना = पठनम्, अध्ययनम्। अच्छा नहीं लगता = न रोचते। टहलना = भ्रमणम्।

अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

नियम 1–जिससे किसी वस्तु का प्रत्यक्ष अथवा कल्पित रूप से अलग होना प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'से' है। जैसे–**हरि अश्वात् अपतत्–**हरि घोड़े से गिर पड़ा। इस वाक्य में 'घोड़े से' हरि अलग हो गया है, अत: अश्व में पंचमी विभक्ति हुई।

अन्य उदाहरण–

1. मम हस्तात् पुस्तकम् अपतत्	–	मेरे हाथ से किताब गिर गयी।
2. छात्रा: गृहात् आगच्छन्ति	–	छात्र घर से आते हैं।
3. अशोक: वृक्षात् अवतरति	–	अशोक पेड़ से उतरता है।
4. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति	–	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
5. कूपात् जलम् आनय	–	कुएँ से पानी लाओ।

नियम 2–जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे–**स: चौरात् विभेति–**वह चोर से डरता है। **पिता पुत्रं पापात् त्रायते–**पिता पुत्र को पाप से बचाता है।

नियम 3– जिसमें कोई वस्तु हटायी जाती है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे– **गुरु: शिष्यं कुमार्गात् निवारयति–**गुरु शिष्य को कुमार्ग से रोकता है।

नियम 4– जिससे नियमपूर्वक पढ़ा जाता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे– **अहं गुरो: व्याकरण पठामि–** मैं गुरुजी से व्याकरण पढ़ता हूँ।

नियम 5– अन्य (सिवाय) दूर, इतर (दूसरा) ऋते (बिना) दिशावाचक तथा कालवाचक शब्दों के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे–**ग्रामात् पूर्व नदी बहति–**गाँव से पूर्व नदी बहती है।

आदर्श वाक्य

1. जना: सिंहात् विभ्यति	–	लोग सिंह से डरते हैं।
2. त्वं चौरात् बालं रक्ष	–	तुम चोर से बालक को बचाओ।

3. कृषका: क्षेत्रात् पशून् निवारयन्ति	–	किसान खेत से पशुओं को रोकते हैं।
4. बालका: अध्यापकात् गणितं पठन्ति	–	लड़के अध्यापक से गणित पढ़ते हैं।
5. ज्ञानात् ऋते न मुक्ति:	–	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।
6. गंगा हिमालयात् प्रभवति	–	गंगा हिमालय से निकलती है।

अभ्यास - 16

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. आजकल विद्यार्थी अध्यापक से नहीं डरते हैं। 2. चूहे बिल्ली से डरते हैं। 3. तालाब में कमल पैदा होते हैं। 4. मैं अपने मित्र के साथ पढ़ता हूँ। 5. माली बाग से जानवरों को निकालता है। 6. चैत के पहले फागुन आता है। 7. कृष्ण के सिवाय मेरी रक्षा कौन करेगा? 8. मेरे गाँव से दूर एक पहाड़ है।

सहायक शब्द– आजकल = इदानीम्। चूहे = मूषका:। पैदा होते हैं = प्रभवन्ति। आता है = आयाति। कृष्ण के सिवाय = कृष्णात् अन्य:।

2. कोष्ठांकित शब्दों में उचित विभक्ति लगाइए–

(1) यमुना (हिमालय) प्रभवति। (2) शिष्य (अध्यापक) निलीयते। (3) (फाल्गुन) अनन्तरं चैत्र: आयाति। (4) (धन) ऋते सुखं न अस्ति। (5) बालिका (सर्प) त्रसति।

सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

जब दो या अधिक शब्दों में सम्बन्ध दिखाया जाता है, उसमें षष्ठी विभक्ति होती है। विभक्ति के चिह्न 'का, के, की; रा, रे, री' है।

आदर्श वाक्य

1.	कृष्ण वसुदेव के पुत्र थे।	–	कृष्ण: वसुदेवस्य पुत्र: आसीत्।
2.	राम भरत के बड़े भाई थे।	–	राम: भरतस्य ज्येष्ठ: भ्राता आसीत्।
3.	कौशल दशरथ की रानी थी।	–	कौशल्या दशरथस्य राज्ञी आसीत्।
4.	रामू नरेश का नौकर है।	–	रामू नरेशस्य सेवक: अस्ति:।
5.	कुएँ का जल मीठा है।	–	कूपस्य जलं मधुरम् अस्ति।
6.	समुद्र का पानी खारा होता है।	–	समुद्रस्य जलं क्षारं भवति।
7.	यह किसान का खेत है।	–	एतत् कृषकस्य क्षेत्रम् अस्ति।
8.	हमारा विद्यालय नगर के मध्य है।	–	अस्माकं विद्यालय: नगरस्य मध्ये अस्ति।
9.	रामायण के रचयिता वाल्मीकि हैं।	–	रामायणस्य रचयिता वाल्मीकि: अस्ति।
10.	गंगा का जल पवित्र होता है।	–	गंगाया: जलं पवित्रं भवति।

अभ्यास - 17

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत-अनुवाद कीजिए–

(1) यह राम का घर है। (2) यह कृष्ण की पुस्तक है। (3) यह लाल फूलों की माला है। (4) लक्ष्मण राम के भाई थे। (5) कृष्ण सुदामा के मित्र थे। (6) गाँव के पास बगीचा है।

अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

जिस स्थान में कोई कार्य होता है, उसमें अधिकरण कारक होता है। अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। अधिकरण के चिह्न 'में, पर, पे' है।

नियम 1–जिस पर स्नेह किया जाता है, जिसमें भक्ति या विश्वास किया जाता है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

नियम 2—जब किसी एक कार्य के हो जाने पर दूसरे कार्य का होना प्रतीत हो, तब पहले हो चुके कार्य में तथा उसके कर्त्ता में सप्तमी विभक्ति होती है।

नियम 3—जिस समय कोई काम होता है, समयवाचक शब्द सप्तमी विभक्ति में रखा जाता है।

नियम 4—जब किसी वस्तु की अपने समूह में विशेषता प्रकट की जाती है तो समूहवाचक शब्द में सप्तमी विभक्ति या षष्ठी विभक्ति होती है।

नियम 5—कुशल, निपुण, पटु आदि अर्थवाची शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है।

आदर्श वाक्य

1. मैं आसन पर बैठा हूँ।	–	अहम् आसने उपविशामि।
2. वह नगर में रहता है।	–	स: नगरे वसति।
3. खेत में अन्न उत्पन्न होता है।	–	क्षेत्रे अन्नम् उत्पन्नं भवति।
4. तालाब में कमल खिलते हैं।	–	सरोवरे कमलानि विकसन्ति।
5. पात्र में जल है।	–	पात्रे जलम् अस्ति।
6. मैं सवेरे घूमता हूँ।	–	अहम् प्रात:काले भ्रमणामि।
7. वे दो बजे यहाँ आये।	–	ते द्विवादनसमये अत्र आगच्छन् ।
8. माँ बालक से प्यार करती है।	–	माता बालके स्निह्यति।
9. रमेश माँ के लिए अच्छा है।	–	रमेश: मातु: साधु:।

अभ्यास - 18

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(1) मैं विद्यालय में पढ़ता हूँ। (2) फूलों पर भौंरे गूँजते हैं। (3) वृक्षों पर पक्षी बैठे हैं। (4) सैनिक पर्वत पर खड़ा है। (5) राम के चले जाने पर भरत अयोध्या आये।

2. कोष्ठांकित शब्दों का सप्तमी विभक्ति में उचित रूप लिखो–

(1) स: (गृह) वसति। (2) (नगर) एक: विद्यालय: अस्ति। (3) मम (कक्षा) त्रिंशत् छात्रा: पठन्ति। (4) पिता (पुत्र) स्निह्यति। (5) अहं (मध्याह्न) नगरं गमिष्यामि।

सम्बोधन

नियम 1– जिसे पुकारा जाता है उसमें सम्बोधन होता है। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न हे, अरे, ए, आदि हैं। ये चिह्न शब्द से पहले लगते हैं। **जैसे**– हे राम! भो बालक!– हे राम अरे लड़के, आदि।

नियम 2– संस्कृत में सम्बोधन के एकवचन का रूप बदलता है, शेष में कर्त्ता कारक के समान होता है।

विशेष– सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता है।

आदर्श वाक्य

1. भो पुत्र ! त्वं कुत्र गच्छसि।	–	अरे बेटा! तुम कहाँ जा रहे हो?
2. बालका: प्रतिदिनं प्रात: उद्यानं भ्रमत।	–	लड़कों प्रतिदिन सबेरे बगीचे में भ्रमण करो।

अभ्यास - 19

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. छात्रो ! परिश्रम से पढ़ो। 2. गुरुदेव! चित्र में क्या है? 3. हे राम ! मेरी रक्षा करो। 4. महर्षि ! आप सब कुछ जानते हैं। 5. विद्यार्थियो ! अपने आसन पर बैठ जाओ।

●●